पाठ – नए मेहमान

पाठ सार

‘नए मेहमान’ एक एकांकी है, जिसके लेखक उदयशंकर भट्ट हैं। इसमें आधुनिक शहरी मध्यवर्गीय परिवार के जीवन की परेशानियाँ और विडंबनाएँ हास्यपूर्ण रूप में दिखाई गई हैं। कहानी एक छोटे किराए के मकान में घटती है, जहाँ विश्वनाथ, उनकी पत्नी रेवती और बच्चे सोने की तैयारी कर रहे हैं। अचानक दरवाजे पर दो अज्ञात मेहमान आते हैं और बिना अनुमति के घर में ठहर जाते हैं। परिवार के छोटे मकान और गर्मी-असुविधा के बीच मेहमानों का अधिकारपूर्ण व्यवहार उन्हें और परेशान कर देता है। भारतीय संस्कृति में ‘अतिथि देवो भव’ की भावना के कारण परिवार उन्हें मना नहीं कर पाता। मेहमानों की हरकतों और मांगों से घर के लोगों को सोने, खाने और आराम में कठिनाई होती है। अंत में पता चलता है कि मेहमानों को किसी दूसरी जगह ठहरना था।

लेखक ने हास्यपूर्ण घटनाओं के माध्यम से यह दिखाया है कि समाज में अतिथि-सत्कार की परंपरा कभी-कभी बोझिल और हास्यास्पद स्थिति भी पैदा कर देती है। ‘नए मेहमान’ न केवल मनोरंजन करता है, बल्कि हमें सोचने पर विवश करता है कि क्या परंपराओं का पालन हमेशा आँख मूँदकर करना उचित है।

शब्दार्थ-

तर	-	भीगा हुआ, गीला
खूंटी	-	दीवार में लगी लकड़ी या लोहे की कील जिस पर कपड़े टाँगे जाते हैं
गठा हुआ शरीर	-	मज़बूत और स्वस्थ शरीर
गेहुँआ रंग	-	हल्का साँवला रंग
गंभीरता का चिह्न	-	सख़्त, सोच-विचार करने वाला भाव
ओफ	-	थकान या कष्ट का भाव व्यक्त करने वाला शब्द
भट्टी	-	आग जलाने का स्थान
आँचल	-	औरत के साड़ी या दुपट्टे का सिर ढकने वाला भाग
आँगन	-	घर का खुला हिस्सा (घर के बीच का खुला स्थान)
निर्दयी	-	दयाहीन
नकद	-	वह धन है जो सिक्कों या नोटों के रूप में हो
अतिथि	-	मेहमान
संपन्न	-	धनी, अमीर
तमाम शरीर	-	पूरा शरीर
सुकुमार	-	नाजुक, कोमल
टाइफाइड	-	बुखार की एक गंभीर बीमारी
हाँके जाओगी	-	अपनी ही बात चलाऊँगी
धुन सवार होना	-	किसी काम में अटक जाना
आगंतुक	-	अतिथि, मेहमान
बंडी	-	कमीज के ऊपर पहना जाने वाला छोटा कोट (जैकेट जैसा)
अवस्था	-	उम्र, आयु

सलवट - झुर्रियाँ, सिकुड़न
अधकटी - आधी कटी हुई
हबड़-तबड़ - घबराहट या उतावलेपन की स्थिति
पल्ला - कपड़े का सिरा (यहाँ पगड़ी का किनारा)
चर्रा रही है - फटने या चटकने की स्थिति में होना
मोल - कीमत, मूल्य
गज - लंबाई नापने की इकाई (कपड़े की माप)
ठग - धोखेबाज, बेईमान व्यापारी
प्राण सूखना - बहुत प्यास लगना, गला सूख जाना
लाला - व्यापारी या सेठ जी को संबोधित करने का शब्द
गोटेवाले - गोटा या किनारी का व्यापार करने वाले व्यापारी
कारोबार - व्यापार
चौपट हो गया - पूरी तरह नष्ट हो जाना
खाक में मिल गए - बर्बाद हो गए
माल-मसाला - कीमती सामान
अंटी - कपड़े की तह, पोटली में रखा छोटा थैला
प्रबंध - व्यवस्था
खाने की भली चलाई - खाने की अधिक चिंता मत करो
सुन्न - संवेदनाहीन, जिसमें जान न रहना
भाड़ में भुनना - तंदूर में चने की तरह तड़पना, कठिनाई में रहना
तुनककर - नाराज़ होकर, चिड़चिड़ेपन से
पसीने से नहा गया - बहुत पसीना आना
नेपथ्य - पर्दे के पीछे से आने वाली आवाज, मंच के बाहर से
अनजान - अपरिचित, जिसे जानकारी न हो
सकपकाकर - घबराकर
खीझकर - झुंझलाकर
धर्मशाला - यात्रियों के ठहरने का स्थान, सराय
वैद्य - आयुर्वेदिक चिकित्सक
कविराज - वैद्य का आदरसूचक संबोधन
अब जान में जान आई - आराम मिला
सिर फटा जा रहा है - सिर दर्द से बहुत तकलीफ़ होना
आगंतुक - आने वाला व्यक्ति, मेहमान
तार - टेलीग्राम (संदेश भेजने का पुराना साधन)
नुक्कड़ - गली का मोड़, चौराहा

कर्तव्य	-	ज़िम्मेदारी, धर्म
यवनिका	-	पर्दा

पाठ से

मेरी समझ से

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उपयुक्त उत्तर के सम्मुख तारा (★) बनाइए। कुछ प्रश्नों के एक से अधिक उत्तर भी हो सकते हैं।

प्रश्न 1. आगंतुकों ने विश्वनाथ के बच्चों को 'सीधे लड़के' किस संदर्भ में कहा?

- अतिथियों की सेवा करने के कारण
- किसी तरह का प्रश्न न करने के कारण
- आज्ञाकारिता के भाव के कारण
- गरमी को चुपचाप सहने के कारण

उत्तर:

- अतिथियों की सेवा करने के कारण (★)

प्रश्न 2. "एक ये पड़ोसी हैं, निर्दयी ...... "विश्वनाथ ने अपने पड़ोसी को निर्दयी क्यों कहा?

- उन्हें कष्ट में देखकर प्रसन्न होते हैं
- पड़ोसी किसी प्रकार का सहयोग नहीं करते हैं
- लड़ने-झगड़ने के अवसर ढूँढ़ते हैं
- अतिथियों का अपमान करते हैं।

उत्तर:

- उन्हें कष्ट में देखकर प्रसन्न होते हैं (★)

प्रश्न 3. "ईश्वर करें इन दिनों कोई मेहमान न आए।" रेवती इस तरह की कामना क्यों कर रही है?

- मेहमान के ठहरने की उचित व्यवस्था न होने के कारण
- रेवती का स्वास्थ्य कुछ समय से ठीक न होने के कारण
- अतिथियों के आने से घर का कार्य बढ़ जाने के कारण
- उसे अतिथियों का आना-जाना पसंद न होने के कारण

उत्तर:

- मेहमान के ठहरने की उचित व्यवस्था न होने के कारण (★)
- रेवती का स्वास्थ्य कुछ समय से ठीक न होने के कारण (★)
- अतिथियों के आने से घर का कार्य बढ़ जाने के कारण (★)

प्रश्न 4. "हे भगवान! कोई मुसीबत न आ जाए।" रेवती कौन-सी मुसीबत नहीं आने के लिए कहती है?

- पानी की कमी होने की

- पड़ोसियों के चिल्लाने की
- मेहमानों के आने की
- गरमी के कारण बीमारी की

उत्तर:

- मेहमानों के आने की (★)

प्रश्न 5. इस एकांकी के आधार पर बताएँ कि मुख्य रूप से कौन-सी बात किसी रचना को नाटक का रूप देती है?

- संवाद
- वर्णन
- कथा
- मंचन

उत्तर:

- संवाद (★)
- मंचन (★)

(ख) हो सकता है कि आप सभी ने अलग-अलग उत्तर चुने हों। अब अपने सहपाठियों के साथ चर्चा कीजिए कि आपने ये उत्तर ही क्यों चुने?

उत्तर:

हमने जो उत्तर चुने हैं वे नाटक के अनुसार पूरी तरह से उचित हैं।

पंक्तियों पर चर्चा

पाठ में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। इन्हें ध्यानपूर्वक पढ़िए और इन पर विचार कीजिए। आपको इनका क्या अर्थ समझ में आया? अपने विचार अपनी कक्षा में साझा कीजिए।

(क) "पानी पीते-पीते पेट फूला जा रहा है, और प्यास है कि बुझने का नाम नहीं लेती।"

उत्तर:

इस पंक्ति का अर्थ यह है कि अत्यधिक गरमी के कारण बार-बार प्यास से गला सूख जाता है। साथ ही पानी पी-पीकर पेट पूरी तरह से भर जाता है और अब पेट में और पानी पीने के लिए जगह नहीं बचती, पर प्यास से होंठ और गला बार-बार सूख रहा है।

(ख) "सारे शहर में जैसे आग बरस रही हो।"

उत्तर:

प्रस्तुत पंक्ति का आशय यह है कि शहर में अत्यधिक गरमी पड़ रही है और गर्मी भी इतनी ज्यादा और तेज है कि ऐसा लगता है मानो सूरज देवता धरती पर आग बरसा रहे हों।

(ग) "यह तो हमारा ही भाग्य है कि चने की तरह भाड़ में भुनते रहते हैं।"

उत्तर:

लेखक बताता है कि मुख्य पात्र विश्वनाथ और उसकी पत्नी रेवती गरीब होने के कारण अपने छोटे से मकान में हर साल गरमी का प्रकोप झेलते हैं। उनके डिब्बे जैसे बंद मकान में कहीं से भी हवा नहीं आती। इसी कारण वे गरमी से इतना ज्यादा झुलसते हैं मानों जैसे भट्ठी में चने को भूना जा रहा हो। वे यह सब अपना नसीब मानकर झेलते हैं।

(घ) "आह, अब जान में जान आई। सचमुच गरमी में पानी ही तो जान है।"

उत्तर:

प्रस्तुत पंक्ति विश्वनाथ के घर पहुँचे अनजान मेहमान नन्हेमल ने कही थी। जब वह गरमी से बेहाल था और उसने ठंडा पानी पिया, उस समय सचमुच उसकी जान में जान आई। यह बात सच भी है गरमी में बस एक पानी ही होता है जो अमृत समान लगता है और शरीर में जान डाल देता है।

मिलकर करें मिलान

स्तंभ 1 में कुछ पंक्तियाँ दी गई हैं और स्तंभ 2 में उनसे मिलते-जुलते भाव दिए गए हैं। स्तंभ 1 की पंक्तियों को स्तंभ 2 की उनके सही भाव वाली पंक्तियों से रेखा खींचकर मिलाइए –

क्रम	स्तंभ 1		स्तंभ 2
1.	लाखों के आदमी खाक में मिल गए।	1.	भोजन की व्यवस्था कब तक हो जाएगी
2.	धोती ऐसी चर्रा रही है, जैसे पुरानी हो।	2.	पहले अपना ध्यान फिर दूसरा काम
3.	माल-मसाला तो अंटी में है न?	3.	बहुत ही समृद्ध व्यक्ति थे पर अब उनके पास कुछ भी नहीं है
4.	खाने में क्या देर-दार है।	4.	कपड़ा पसीने से भीगकर पुराने जैसा हो गया है
5.	पहले आत्मा फिर परमात्मा	5.	धनराशि सुरक्षित तो है न!

उत्तर:

1. 3
2. 4
3. 5
4. 1
5. 2

सोच-विचार के लिए

एकांकी को पुनः पढ़िए, पता लगाइए और लिखिए-

(क) "शहर में तो ऐसे ही मकान होते हैं।" नन्हेमल का 'ऐसे ही मकान' से क्या आशय है?

उत्तर:

'ऐसे ही मकान'- से नन्हेमल का आशय था कि शहर में डिब्बे जैसे बहुत ही बेकार मकान हैं। उनमें ना तो हवा आती है ना ही धूप। इन मकानों में रहना तो किसी जेल में रहने से कम नहीं, परंतु अब तो शहरों में प्रायः मध्यमवर्ग के पास ऐसे ही सुविधाहीन मकान हैं।

(ख) पड़ोसी को विश्वनाथ से किस तरह की शिकायत है? आपके विचार से पड़ोसी का व्यवहार उचित है या अनुचित? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर:

पड़ोसी को विश्वनाथ से यह शिकायत थी कि विश्वनाथ के घर अक्सर मेहमान आते रहते हैं और वह उसकी छत पर हाथ-मुँह धोते समय गंदा पानी बिखेर देते हैं। इसी कारण पड़ोसी विश्वनाथ से लड़ने उसके घर चला गया और उसे भला-बुरा कहने लगा। पड़ोसी का यह व्यवहार पूरी तरह से अनुचित था। एक अच्छे पड़ोसी को सहयोग के साथ रहना चाहिए।

(ग) एकांकी में विश्वनाथ नन्हेमल और बाबूलाल को नहीं जानता है, फिर भी उन्हें अपने घर में आने देता है। क्यों?

उत्तर:

विश्वनाथ, नन्हेमल और बाबूलाल को नहीं जानता था, परंतु फिर भी उन्हें अपने घर के अंदर इसलिए आने देता है क्योंकि विश्वनाथ एक सरल और संस्कारी व्यक्ति था। वह कभी किसी का अपमान नहीं करता था। दूसरी बात यह थी कि उसे लग रहा था कि अगर ये मेरे घर आएँ हैं तो संभवतः किसी ने तो इन्हें मेरे पास अवश्य भेजा होगा और इसी बात को जानने के लिए वह उन्हें पूछ भी रहा था कि आप कहाँ से आएँ हैं?

(घ) एकांकी के उन संवादों को ढूँढ़कर लिखिए जिनसे पता चलता है कि बाबूलाल और नन्हेमल विश्वनाथ के परिचित नहीं हैं?

उत्तर:

विश्वनाथ – जी, आप लोग…
विश्वनाथ – क्षमा कीजिए, आप कहाँ से पधारे हैं?
नन्हेमल – अरे, आप नहीं जानते ! वह लाला संपतराम हैं ना गोटेवाले,
विश्वनाथ – मैं संपतराम को नहीं जानता।
विश्वनाथ – आप कहाँ से आए हैं?
रेवती – ये लोग कौन हैं? जान-पहचान के तो मालूम नहीं होते।
विश्वनाथ – ना जाने कौन हैं?
रेवती – पूछ लो न?
विश्वनाथ – क्या पूछ लूँ? दो-तीन बार पूछा, ठीक से उत्तर ही नहीं देते।
नन्हेमल – हाँ, हाँ पूछिए, मालूम होता है, आपने हमें पहचाना नहीं।
विश्वनाथ – तो आप कोई चिट्ठी-विट्ठी लाए हैं?
विश्वनाथ – (खीझकर) जिसके यहाँ आपको जाना है उसका नाम भी तो बताया होगा?
बाबूलाल – क्या नाम था चाचा?
नन्हेमल – नाम तो याद नहीं आता। जरा ठहरिए, सोच लूँ।
बाबूलाल – अरे चाचा ! कविराज बताया था।
विश्वनाथ – लेकिन मैं कविराज तो नहीं हूँ।

विश्वनाथ – आपको जिनके यहाँ जाना था, वे काम क्या करते हैं?
नन्हेमल – हाँ, याद आया। बताया था वैद्य हैं।
विश्वनाथ – पर मैं तो वैद्य नहीं हूँ।

(ङ) एकांकी के उन वाक्यों को ढूँढ़कर लिखिए जिनसे पता चलता है कि शहर में भीषण गरमी पड़ रही है।

उत्तर:

विश्वनाथ – ओह! बड़ी गरमी है! इन बंद मकानों में रहना कितना भयंकर है? मकान हैं कि भट्टी !
रेवती – पत्ता तक नहीं हिल रहा है। जैसे सांस बंद हो जाएगी। सिर फटा जा रहा है।
रेवती – आँगन में घड़े में भी पानी ठंडा नहीं होता ।
विश्वनाथ – पानी पीकर पेट फूला जा रहा है और प्यास है कि बुझने का नाम ही नहीं लेती।
विश्वनाथ – सारे शहर में जैसे आग बरस रही है। यहाँ की गरमी से तो ईश्वर बचाए ।
विश्वनाथ – सारा शरीर मारे गरमी के उबल रहा है।
रेवती – चारों तरफ दीवारें तप रही हैं।
नन्हेमल – बड़ी गरमी है क्या कहें। कपड़े तो ऐसे हो गए हैं कि निचोड़ लो।
बाबूलाल – ठंडा-ठंडा पानी पिलाओ, प्राण सूखे जा रहे हैं।

अनुमान और कल्पना से

अपने समूह में मिलकर चर्चा कीजिए-

(क) एकांकी में विश्वनाथ अपनी पत्नी को अतिथियों के लिए भोजन की व्यवस्था करने के लिए कहता है। साथ ही रेवती की अस्वस्थता का विचार करके भोजन बाजार से मँगवाने का सुझाव भी देता है। लेकिन उसने स्वयं अतिथियों के लिए भोजन बनाने के विषय में क्यों नहीं सोचा?

उत्तर:

अतिथियों के आने पर विश्वनाथ ने अपनी पत्नी रेवती से भोजन बनाने के लिए कहा क्योंकि रेवती उसकी पत्नी थी और घर में भोजन वही बनाया करती थी । विश्वनाथ पूरा दिन काम करके शाम को घर लौटा था और उसे भोजन बनाना भी नहीं आता था। जब उसकी पत्नी ने सिर-दर्द की बात कही तो विश्वनाथ ने बाहर से भोजन मँगवाने के लिए कहा, जिस पर उसकी पत्नी ने मेहमानों पर रुपये खर्च करने के लिए मना कर दिया। इन सभी कारणों से विश्वनाथ ने 'रेवती' से भोजन बनाने के लिए कहा।

(ख) एकांकी में विश्वनाथ का बेटा प्रमोद अतिथियों के पेयजल की व्यवस्था करता है और छोटी बहन का भी ध्यान रखता है। प्रमोद को इस तरह के उत्तरदायित्व क्यों दिए गए होंगे?

उत्तर:

'प्रमोद', विश्वनाथ का बड़ा बेटा था और किरण उसकी छोटी बहन । विश्वनाथ ने बेटे को बर्फ लाने और मेहमानों को पानी पिलाने को इसलिए कहा होगा जिससे कि वह अपने बेटे में उत्तम संस्कार डाल सके तथा घर आए मेहमानों का सत्कार करना सीखे। इसके साथ ही छोटी बहन का ध्यान रखकर वह अपने कर्तव्यों को भी सीखेगा और घर में अपनी जिम्मेदारी को समझेगा।

(ग) "कैसी बातें करते हो, भैया! मैं अभी खाना बनाती हूँ" भीषण गरमी और सिर में दर्द के बावजूद भी रेवती भोजन की व्यवस्था करने के लिए क्यों तैयार हो गई होगी?

उत्तर:

भीषण गर्मी और सिर दर्द के बावजूद भी रेवती खाना बनाने को इसलिए तैयार हो गई क्योंकि अब मेहमान के रूप में उसका भाई आया था। भाई को देखकर तो रेवती का सारा सिर दर्द दूर हो गया। वह अपने भाई की अच्छी-सी खातिरदारी करना चाहती थी, इसी कारण उसने मिठाई का प्रबंध करने की बात की; साथ ही खुशी-खुशी अपने भाई के लिए भोजन बनाने की तैयारी में लग गई।

(घ) एकांकी से गरमी की भीषणता दर्शाने वाली कुछ पंक्तियाँ दी जा रही हैं। अपनी कल्पना और अनुमान से बताइए कि सर्दी और वर्षा की भीषणता के लिए आप इनके स्थान पर क्या-क्या वाक्य प्रयोग करते हैं? अपने वाक्यों को दिए गए उचित स्थान पर लिखिए।

उत्तर:

गरमी की भीषणता दर्शाने वाली पंक्तियाँ	सर्दी की भीषणता दर्शाने वाली पंक्तियाँ	वर्षा की भीषणता दर्शाने वाली पंक्तियाँ
1. यह गरमी में भुन रहा है।	यह सर्दी में जम गया।	यह वर्षा में भीग रहा है।
2. पर बरफ भी कोई कहाँ तक पिए।	गर्म चाय भी ठंडी हो गई।	तेज वर्षा से फसल बह गई।
3. सारे शहर में जैसे आग बरस रही हो।	पूरा शहर ठंड से अकड़ रहा है।	पूरे शहर में वर्षा का जल भर गया।
4. प्यास है कि बुझने का नाम नहीं लेती।	सर्दी है कि कम होने का नाम नहीं ले रही।	वर्षा है कि रुकने का नाम नहीं ले रही।
5. चारों तरफ दीवारें तप रही हैं।	ठंडे फर्श पर पैर रखने से पैरों का खून जम गया।	वर्षा में छत टपक रही है। तेज वर्षा से पानी घर के अंदर आ रहा है।
6. ठंडा-ठंडा पानी पिलाओ दोस्त, प्राण सूखे जा रहे हैं।	गर्म चाय पिलाओ दोस्त ठंड से जमे जा रहे हैं।	छतरी दे दो मित्र, बारिश से भीग रहा हूँ।
7. सचमुच गरमी में पानी ही तो जान है।	गर्म-गर्म चाय से ठंड थोड़ी कम हुई।	वर्षा में चाय-पकौड़े से आनंद ही आ गया।
8. यह तो हमारा ही भाग्य है कि चने की तरह भाड़ में भुनते रहते हैं।	गरीबी के कारण ठंड में जमना पड़ रहा है।	टूटी छत के कारण सारे घर में पानी टपक रहा है।
9. फिर भी पसीने से नहा गया हूँ।	वर्षा की भीषणता दर्शाने वाली पंक्तियाँ	'वर्षा में पूरा भीग चुका हूँ।

एकांकी की रचना

इस एकांकी के आरंभ में पात्र – परिचय, स्थान, समय और विश्वनाथ और रेवती के घर के विषय में बताया गया है, जैसे कि –

- "गरमी की ऋतु, रात के आठ बजे का समय। कमरे के पूर्व की ओर दो दरवाजे…"
- विश्वनाथ – उफ्फ, बड़ी गरमी है (पंखा जोर-जोर से करने लगता है) इन बंद मकानों में रहना कितना भयंकर है। मकान है कि भट्टी !
  (पश्चिम की ओर से एक स्त्री प्रवेश करती है)
- रेवती – (आँचल से मुँह का पसीना पोंछती हुई) पत्ता तक नहीं हिल रहा है। जैसे साँस बंद हो जाएगी। सिर फटा जा रहा है।

एकांकी की इन पंक्तियों को ध्यान से पढ़िए। इन्हें पढ़कर स्पष्ट पता चल रहा है कि पहली पंक्ति समय और स्थान आदि के विषय में बता रही है। इसे रंगमंच – निर्देश कहते हैं। वहीं दूसरी पंक्तियों से स्पष्ट है कि ये दो लोगों द्वारा कही गई बातें हैं। इन्हें संवाद कहा जाता है। ये 'नए मेहमान' एकांकी का एक अंश है।

एकांकी एक प्रकार का नाटक होता है जिसमें केवल एक ही अंक या भाग होता है। इसमें किसी कहानी या घटना को संक्षेप में दर्शाया जाता है। आप इस एकांकी में ऐसी अनेक विशेषताएँ खोज सकते हैं। (जैसे- इस एकांकी में कुछ संकेत कोष्ठक में दिए गए हैं, पात्र – परिचय, अभिनय संकेत, वेशभूषा संबंधी निर्देश आदि।)

(क) अपने समूह में मिलकर इस एकांकी की विशेषताओं की सूची बनाइए।

उत्तर:

एकांकी की विशेषताएँ

1. कहानी के आरंभ में पात्रों का परिचय
2. मंचन हेतु स्थान का उचित रेखाचित्र
3. पात्रों के वस्त्र एवं कमरे की सजावट कथानुसार पूर्वतः उचित
4. प्रभावशाली, संक्षिप्त एवं पूर्ण संवाद
5. कथा विस्तार हेतु सामान्य निर्देश, सटीकता से प्रस्तुत
6. जिज्ञासायुक्त प्रश्नों का पूर्ववत समाधान
7. कथा का अंत संतोषजनक एवं पूर्ण।

(ख) आगे कुछ वाक्य दिए गए हैं। एकांकी के बारे में जो वाक्य आपको सही लग रहे हैं, उनके सामने 'हाँ' लिखिए। जो वाक्य सही नहीं लग रहे हैं, उनके सामने 'नहीं' लिखिए।

उत्तर:

वाक्य	हाँ /नहीं
1. 'नए मेहमान' एकांकी में पूरी कहानी एक ही स्थान, घर में घटित होती दिखाई गई है।	हाँ
2. एकांकी में पात्रों की संख्या बहुत अधिक है।	नहीं
3. एकांकी में एक कहानी छिपी है।	हाँ

4. एकांकी और कहानी में कोई अंतर नहीं है।	हाँ
5. एकांकी में कहानी की घटनाएँ अलग-अलग दिनों या महीनों में हो रही हैं।	नहीं
6. एकांकी में कहानी मुख्य रूप से संवादों से आगे बढ़ती है।	हाँ
7. एकांकी में पात्रों को अभिनय के लिए निर्देश दिए गए हैं।	हाँ

अभिनय की बारी

(क) क्या आपने कभी मंच पर कोई एकांकी या नाटक देखा है? टीवी पर फिल्में और धारावाहिक तो अवश्य देखे होंगे! अपने अनुभवों से बताइए कि यदि आपको अपने विद्यालय में 'नए मेहमान' एकांकी का मंचन करना हो तो आप क्या – क्या तैयारियाँ करेंगे।

(उदाहरण के लिए- इस एकांकी में आप क्या – क्या जोड़ेंगे जिससे यह और अधिक रोचक बने, कौन-से पात्र जोड़ेंगे या पात्रों की वेशभूषा क्या रखेंगे?)

उत्तर:

हमें यह नाटक बहुत मजेदार लगा। अगर हम इसे अपने विद्यालय के मंच पर प्रस्तुत करें तो और भी आनंद आएगा। इसके लिए सबसे पहले पात्रों के लिए उपयुक्त बच्चों का चयन करेंगे, फिर उन्हें उनके संवाद बताएँगे और अभिनय का अभ्यास प्रारंभ करवाएँगे। कथा को आगे बढ़ाने और निर्देशन हेतु एक संवादवाचक का भी चयन करेंगे।

नाटक के लिए जरूरी सामान—कुर्सी, पलंग, गिलास, पंखा इत्यादि—का भी इंतजाम किया जाएगा। पात्रों की वेशभूषा यहाँ उपयुक्त रूप से प्रस्तुत की गई है। इसमें किसी बदलाव की आवश्यकता नहीं है।

हाँ, अंत में हम मामाजी के साथ उनके बच्चों और मामी को भी दिखा सकते हैं। तब मुख्य पात्र अपनी पत्नी से कह सकता है:

"अभी दो लोगों के आने से तुम्हारा सिरदर्द बढ़ गया था, और अब चार लोग आ गए हैं तो तुम बिल्कुल स्वस्थ हो गई!"

इस पर उनकी पत्नी कहेगी:

"खबरदार! यदि मेरे मायके वालों के खिलाफ कुछ बोला तो अब जाओ, उनके अच्छे भोजन का प्रबंध करो।"

(ख) अब आपको अपने – अपने समूह में इस एकांकी को प्रस्तुत करने की तैयारी करनी है। इसके लिए आपको यह सोचना है कि कौन किस पात्र का अभिनय करेगा। आपके शिक्षक आपको तैयारी के बाद अभिनय के लिए निर्धारित समय देंगे (जैसे 10 मिनट या 15 मिनट) । आपको इतने ही समय में एकांकी प्रस्तुत करनी है। बारी-बारी से प्रत्येक समूह एकांकी प्रस्तुत करेगा ।

उत्तर:

छात्र स्वयं करेंगे।

भाषा की बात

"सारे शहर में जैसे आग बरस रही हो।"

" चारों तरफ दीवारें तप रही हैं।"

"यह तो हमारा ही भाग्य है कि चने की तरह भाड़ में भुनते रहते हैं।"

उपर्युक्त वाक्यों में रेखांकित शब्द गरमी की प्रचंडता को दर्शा रहे हैं कि तापमान अत्यधिक है।

एकांकी में इस प्रकार के और भी प्रयोग हुए हैं जहाँ शब्दों के माध्यम से विशेष प्रभाव उत्पन्न किया गया है, उन प्रयोगों को छाँटकर अपनी लेखन पुस्तिका में लिखिए।

उत्तर:

- कितना भयंकर है ! मकान है कि भट्ठी !
- जैसे साँस बंद हो जाएगी।
- कब तक इस जेलखाने में सड़ना होगा?
- गरमी के मारे मर रही हूँ।
- गरीबों की तो मौत है।
- तमाम शरीर मारे गरमी के उबल उठा है।
- कपड़े तो ऐसे हो गए कि निचोड़ लो।
- प्राण सूखे जा रहे हैं।
- पसीने से भीग गया।
- कारोबार सब चौपट हो गया।
- बिस्तर भी पसीने से भीग गया।
- लाखों के आदमी खाक में मिल गए।
- माल मसाला तो अंटी में है न?
- सोते-सोते हाथ-पैर सुन्न हो जाते थे
- पहले आत्मा, फिर परमात्मा।
- तबीयत अब शांत हुई है।

मुहावरे

"आज दो साल से दिन-रात एक करके ढूँढ़ रहा हूँ।"

"लाखों के आदमी खाक मिल गए।"

उपर्युक्त वाक्यों में रेखांकित वाक्यांश 'रात-दिन एक करना' तथा 'खाक में मिलना' मुहावरों का प्रायोगिक रूप है। ये वाक्य में एक विशेष प्रभाव उत्पन्न कर रहे हैं। एकांकी में आए अन्य मुहावरों की पहचान करके लिखिए और उनके अर्थ समझते हुए उनका अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

उत्तर:

1. **साँस बंद हो जाएगी** – मुहावरा
   - **अर्थ:** साँस लेने में कठिनाई होना।
   - **वाक्य:** बहुत घुटन है इस कमरे में, मेरी तो साँसें बंद हो रही हैं।

2. **गरीबों की तो मौत है** – कहावत
   - **अर्थ:** गरीबों को हमेशा परेशानी झेलनी पड़ती है।
   - **वाक्य:** चाहे कितना भी विकास कर लो, गरीबों पर किसी का ध्यान नहीं जाता। गरीबों की तो हर पल मौत है।
3. **प्राण सूख रहे हैं** – मुहावरा
   - **अर्थ:** बहुत डर जाना।
   - **वाक्य:** शेर को सामने देखकर मेरे तो प्राण सूख गए।
4. **गरमी के मारे उबल उठना** – मुहावरा
   - **अर्थ:** परेशान होना।
   - **वाक्य:** आज की गर्मी ने तो सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए, मैं तो गरमी के मारे उबल उठा हूँ।
5. **चौपट होना** – मुहावरा
   - **अर्थ:** नष्ट होना।
   - **वाक्य:** इस बरसात में तो मेरी सारी फसल चौपट हो गई।
6. **हाथ-पैर सुन्न होना** – मुहावरा
   - **अर्थ:** घबरा जाना।
   - **वाक्य:** घने जंगलों से गुजरते हुए मेरे हाथ-पैर सुन्न हो रहे थे।
7. **शांत होना** – मुहावरा
   - **अर्थ:** धैर्य रखना।
   - **वाक्य:** जल्दबाजी से काम खराब होते हैं, हमें शांत होकर कार्य करना चाहिए।
8. **पहले आत्मा, फिर परमात्मा** – कहावत
   - **अर्थ:** पहले अपना ध्यान करना, फिर दूसरों का।
   - **वाक्य:** मैं पहले अपना कार्य समाप्त कर लूँगी, फिर तुम्हारा देखूँगी क्योंकि पहले आत्मा, फिर परमात्मा।
9. **धुन सवार होना** – मुहावरा
   - **अर्थ:** किसी बात के पीछे पड़ जाना।
   - **वाक्य:** रोहित के सिर पर तो नई कार लेने की धुन सवार हो गई है, अब वह लेकर ही मानेगा।
10. **अपनी हाँकना** – मुहावरा
    - **अर्थ:** अपनी ही बात कहना।
    - **वाक्य:** तुम केवल अपनी ही हाँकते रहते हो, कभी दूसरों की भी सुन लिया करो।
11. **सिर फटना** – मुहावरा
    - **अर्थ:** मानसिक तनाव।
    - **वाक्य:** पूरा घर फैला देखकर तो मेरा सिर फटने लग गया।

बात पर बल देना

• "वह तो कहो, मैं भी ढूँढ़कर ही रहा।"
उपर्युक्त वाक्य से रेखांकित शब्द 'ही' हटाकर पढ़िए-
"वह तो कहो, मैं भी ढूँढ़कर रहा"

(क) दो-दो के जोड़े में चर्चा कीजिए कि वाक्य में 'ही' के प्रयोग से किस बात को बल मिल रहा था और 'ही' हटा देने से क्या कमी आई?

उत्तर:

'ही' के प्रयोग से किसी भी बात को बल मिलता है।

(ख) नीचे लिखे वाक्यों में ऐसे स्थान पर 'ही' का प्रयोग कीजिए कि वे सामने लिखा अर्थ देने लगे-

1.	विश्वनाथ के अतिथि यहाँ रुकेंगे	और किसी के अतिथि नहीं।
2.	विश्वनाथ के अतिथि यहाँ रुकेंगे	यहाँ के अतिरिक्त और कहीं नहीं।
3.	विश्वनाथ के अतिथि यहाँ रुकेंगे	यहाँ रुकना निश्चित है।

उत्तर:

1. विश्वनाथ के अतिथि ही यहाँ रुकेंगे और किसी के अतिथि नहीं।
2. विश्वनाथ के अतिथि ही यहाँ रुकेंगे यहाँ के अतिरिक्त और कहीं नहीं।
3. विश्वनाथ के अतिथि ही यहाँ रुकेंगे यहाँ रुकना निश्चित है।

• "तुम नहाने तो जाओ।",
उपर्युक्त वाक्य में 'तो' का स्थान बदलकर अर्थ में आए परिवर्तन पर ध्यान दें-
" तुम तो नहाने जाओ।"
"तुम नहाने जाओ तो।"
'ही' और 'तो' के ऐसे और प्रयोग करके वाक्य बनाइए।

उत्तर:

'ही' के प्रयोग-

1. मैं तुमसे कह रहा हूँ
   मैं तुमसे ही कह रहा हूँ
2. रमेश ने गलत कहा है।
   रमेश ने गलत ही कहा है।
3. तुम चले जाओ अब
   तुम चले ही जाओ अब

'तो' के प्रयोग-

1. मैं फिल्म जरूर देखूँगा।
   मैं तो फिल्म जरूर देखूँगा।
2. बच्चे शरारती होते हैं।
   बच्चे तो शरारती होते हैं।
3. गीता घूमने अवश्य चलेगी।
   गीता तो घूमने अवश्य चलेगी।

पाठ से आगे

आपकी बात

(क) "रेवती – ये लोग कौन हैं? जान-पहचान के तो मालूम नहीं पड़ते।
विश्वनाथ-क्या पूछ लूँ? दो-तीन बार पूछा, ठीक-ठीक उत्तर ही नहीं देते।"
उपर्युक्त संवाद से पता चलता है कि विश्वनाथ दुविधा की स्थिति में है। क्या आपके सामने कभी कोई ऐसी दुविधापूर्ण स्थिति आई है जब आपको यह समझने में समय लगा हो कि क्या सही है और क्या गलत? अपने अनुभव साझा कीजिए।

उत्तर:

मेरे सामने एक बार ऐसी स्थिति आई, जिसे मैं समझ नहीं पा रहा था। प्रायः ऐसी स्थिति तब आती है जब हमारे सामने दो विकल्प हों और हमें किसी एक को चुनना पड़े। मुझे ऐसा ही अनुभव तब हुआ जब पापा का तबादला दूसरे शहर में हुआ।

उस समय माँ और छोटी बहन पापा के साथ जाने को तैयार थीं, पर मैं यह तय नहीं कर पा रहा था कि अपना स्कूल छोड़ूँ या नहीं। स्कूल में और पड़ोस में मेरे बहुत सारे मित्र थे। पापा ने सुझाव दिया कि मैं पास में रहने वाली अपनी मौसी के घर रहकर पढ़ाई पूरी कर लूँ। पहले तो यह उचित लगा, लेकिन अगले ही पल माँ-बाप की याद सताने लगी। दो दिन तक मैं मित्रों और माता-पिता के बीच निर्णय नहीं कर पाया। तीसरे दिन मैंने साहस करके तुरंत निर्णय लिया और माँ-बाप के साथ जाने के लिए तैयार हो गया।

(ख) एकांकी से ऐसा लगता है कि नन्हेमल और बाबूलाल सगे संबंधी ही नहीं, अच्छे मित्र भी हैं। आपके अच्छे मित्र कौन-कौन हैं? वे आपको क्यों प्रिय हैं?

उत्तर:

मेरा अच्छा मित्र मेरे पड़ोस में रहने वाला राहुल है। वैसे तो स्कूल में भी मेरे बहुत मित्र हैं और पड़ोस में भी। मैं सबके साथ खेलता हूँ परंतु उन सबमें मेरा सबसे अच्छा मित्र 'राहुल' ही है क्योंकि वह हमेशा मेरा साथ देता है और गलत बात पर मुझे टोकता भी है। वह पढ़ाई में भी मेरी सहायता करता है। वह समय पर काम पूरा करने के लिए मुझे प्रेरित भी करता है। जब भी मैं परेशान होता हूँ तो वह मुझे हँसाता है और परेशानी से बाहर निकलने में मदद करता है।

(ग) आप अपने किसी संबंधी या मित्र के घर जाने से पहले क्या – क्या तैयारी करते हैं?

उत्तर:

जब हम अपने मित्र या संबंधी के घर जाते हैं, तो सबसे पहले उसे फोन करके सूचित कर देते हैं कि हम आ रहे हैं

क्योंकि क्या पता उसे ही उस दिन कोई काम हो। इस प्रकार उसे और हमें दोनों को सुविधा रहती है और वह भी आने वाले के लिए तैयार रहता है। फिर हम अपने मित्र अथवा संबंधी के लिए फल, मिठाई इत्यादि उपहार स्वरूप लेकर जाते हैं।

(घ) विश्वनाथ के पड़ोसी उनका किसी प्रकार से भी सहयोग नहीं करते हैं। आप अपने पड़ोसियों का किस प्रकार से सहयोग करते हैं?

उत्तर:

हम अपने पड़ोसी के साथ सदैव मिलकर रहते हैं। हमारे पड़ोसी भी हमारे सुख-दुख में शामिल होते हैं। हम अक्सर शाम को साथ बैठकर बातें करते हैं। यदि कभी घर में किसी वस्तु की आवश्यकता अचानक से पड़ जाए और उस समय लाना संभव न हो तो हमारे पड़ोसी हमारी मदद करते हैं। कभी-कभी माँ-बाप को कहीं बाहर जरूरी काम से जाना पड़ जाए तो हम अपने पड़ोसी के घर रुक जाते हैं और वहाँ आँटी हमारा बहुत ध्यान रखती है। हम त्योहारों पर भी एक-दूसरे को शुभकामना देते हैं और मिलकर त्योहार मनाते हैं। हम अपने पड़ोसी से और हमारे पड़ोसी हमसे, हम दोनों ही एक-दूसरे से खुश तथा संतुष्ट हैं।

(ङ) नन्हेमल और बाबूलाल का व्यवहार सामान्य अतिथियों जैसा नहीं है। आपके अनुसार सामान्य अतिथियों का व्यवहार कैसा होना चाहिए?

उत्तर:

नन्हेमल और बाबूलाल का व्यवहार सामान्य अतिथियों जैसा नहीं था, क्योंकि वे दोनों पहली बार विश्वनाथ के घर आए थे और बिना किसी यकीन के उसके मेहमान बनने लगे। उन्होंने यह जानना भी जरूरी नहीं समझा कि वे सही स्थान और सही व्यक्ति के पास आए भी हैं या नहीं। ये देखकर कि मेजबान की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है और वहाँ ठहरने का उपयुक्त स्थान भी नहीं है फिर भी वे दोनों जबरदस्ती के मेहमान बनकर घरवालों को परेशान कर रहे थे। ऐसी हरकतें एक अच्छे मेहमान को शोभा नहीं देती। हमें मेहमान बनकर जाना चाहिए, बोझ बनकर नहीं।

सावधानी और सुरक्षा

(क) विश्वनाथ ने नन्हेमल और बाबूलाल से उनका परिचय नहीं पूछा और उन्हें घर के भीतर ले आए। यदि आप उनके स्थान पर होते तो क्या करते?

उत्तर:

यदि हम विश्वनाथ के स्थान पर होते तो कभी भी अपने घर में ऐसे व्यक्तियों को घुसने नहीं देते जिन्हें हम जानते ना हो, क्योंकि आजकल जमाना सही नहीं है। ऐसे ही किसी का घर में आना सुरक्षा की दृष्टि से खतरनाक हो सकता है। इसलिए मैं पहले दरवाजे पर ही उनका नाम और पहचान पूछता और स्वयं से क्या संबंध है? किसने उन्हें भेजा है और किससे उन्हें मिलना है? यह सब जानने के बाद ही यदि उचित लगता तो घर में प्रवेश की इजाजत देता।

(ख) आपके माता-पिता या अभिभावक की अनुपस्थिति में यदि कोई अपरिचित व्यक्ति आए तो आप क्या-क्या सावधानियाँ बरतेंगे?

उत्तर:

हमारे माता-पिता की अनुपस्थिति में यदि कोई अपरिचित आए तो हम उन्हें कभी भी घर में आने की इजाजत नहीं देंगे। हम यह नहीं सोचेंगे कि आने वाले को बुरा लग रहा है या नहीं, बल्कि हम इस बात का ध्यान रखेंगे कि इन्हें घर में घुसा कर कहीं अनहोनी ना हो जाए। इस कारण हम उनसे आदरपूर्वक कहेंगे कि कृपया आप बाद में आएँ जब माता-पिता घर वापस आ जाएँ और हम घर का दरवाजा बंद कर लेंगे।

सृजन

(क) आपने यह एकांकी पढ़ी। इस एकांकी में एक कहानी कही गई है। उस कहानी को अपने शब्दों में लिखिए। (जैसे- एक दिन मेरे घर में मेहमान आ गए…)

उत्तर:

एक दिन मेरे घर में मेहमान आ गए। मैं उन्हें पहचान नहीं पा रहा था, परंतु उन्होंने मुझे पूछने का अवसर दिए बिना घर में कदम रख दिया। मैं कुछ समझ नहीं पाया। पत्नी ने अलग बुलाकर पूछा कि कौन हैं? मैंने कंधे उचकाकर पूछा पता नहीं, जानने की कोशिश कर रहा हूँ पर ठीक से कुछ स्पष्ट नहीं हो पा रहा। चलो फिर से पूछता हूँ।

मैंने दो-तीन बार प्रयास किया, परंतु उन्होंने स्पष्ट उत्तर नहीं दिया और अपने पानी पीने, भोजन करने और नहाने की बात मुझसे करने लगे। भोजन की बात पर पत्नी नाराज हो गई और सिर दर्द की बात कहकर भोजन बनाने से मना कर दिया। मैंने बाहर से लाने की बात कही तो भी पैसा खर्च करने से मना कर दिया।

बाद में पूछने पर पता चला कि वे दोनों गलत घर में आ पहुँचे हैं। उन्हें तो दूसरी गली में कविराज वैद्य के घर जाना था। वे दोनों क्षमा माँगकर वहाँ से चले गए। मैंने और पत्नी ने राहत की साँस ली। तभी मेरी पत्नी का भाई मेहमान बनकर आ गया और सिर दर्द से परेशान पत्नी का दर्द मिनटों में छू-मंतर हो गया तथा वह खुशी से चहक उठी, मिठाइयाँ मँगवाकर भाई के लिए खाना बनाने चल दी। मैं इस बदलते रूप को देखकर हैरान था।

गरमी का प्रकोप

प्रश्न- "तमाम शरीर मारे गरमी के उबल उठा है।"

एकांकी में भीषण गरमी का वर्णन किया गया है। आप गरमी के प्रकोप से बचने के लिए क्या-क्या सावधानी बरतेंगे? पाँच-पाँच के समूह में चर्चा करें। मुख्य बिंदुओं को चार्ट पेपर पर लिखकर बुलेटिन बोर्ड पर लगाएँ और इन्हें व्यवहार में लाएँ।

उत्तर:

हम गर्मी से बचने के लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान रखेंगे-

1. पानी ज्यादा पिएँगे।
2. बाहर धूप में नहीं जाएँगे।
3. सूती कपड़े पहनेंगे।
4. रोज नहाएँगे।
5. नींबू पानी का सेवन करेंगे।

तार से संदेश

प्रश्न- "क्या मेरा तार नहीं मिला?"
रेवती के भाई ने अपने आने की सूचना तार द्वारा भेजी थी। 'तार' संदेश भेजने का एक माध्यम था। जिसके द्वारा शीघ्रता से किसी के पास संदेश भेजा जा सकता था, किंतु अब इसका प्रचलन नहीं है।
टेलीग्राफ
किसी भौतिक वस्तु के विनिमय के बिना ही संदेश को दूर तक संप्रेषित करना टेलीग्राफी कहलाता है। विद्युत धारा की सहायता से, पूर्व निर्धारित संकेतों द्वारा, संवाद एवं समाचारों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजनेवाला तथा प्राप्त करने वाला यंत्र तारयंत्र (टेलीग्राफ) कहलाता है। वर्तमान में यह प्रौद्योगिकी अप्रचलित हो गई है।

(क) तार भेजने के आधार पर अनुमान लगाएँ कि यह एकांकी लगभग कितने वर्ष पहले लिखी गई होगी?

उत्तर:

1850 से शुरू हुआ और 1902 तक तार भेजने का प्रचलन था यह एकांकी इन्हीं वर्षों में लिखी गयी होगी।

(ख) आजकल संदेश भेजने के कौन-कौन से साधन सुलभ हैं?

उत्तर:

आजकल, संदेश – ईमेल, वॉटसअप, टेलीग्राम, फेसबुक, ट्वीटर, एस.एम.एस तथा वीडियो कॉन्फ्रेसिंग द्वारा भेजे जाते हैं।

(ग) आप किसी को संदेश भेजने के लिए किस माध्यम का सर्वाधिक उपयोग करते हैं?

उत्तर:

हम Whatsapp आदि तथा ईमेल के द्वारा ज्यादातर संदेश भेजते हैं।

(घ) अपने किसी प्रिय व्यक्ति को एक पत्र लिखकर भारतीय डाक द्वारा भेजिए।

उत्तर:

छात्र स्वयं करें।

नाप तौल और मुद्राएँ

"जबकि नत्थामल के यहाँ साढ़े नौ आने गज बिक रही थी।"
उपर्युक्त पंक्ति के रेखांकित शब्दों पर ध्यान दीजिए। रेखांकित शब्द 'साढ़े नौ', 'आने', 'ग़ज' में 'साढ़े नौ' भारतीय भाषा में अंतरराष्ट्रीय अंक (9.5) को दर्शा रहा है तो वहीं 'आने' शब्द भारतीय मुद्रा और 'गज' शब्द लंबाई नापने का मापक है।

(क) पता लगाइए कि एक रुपये में कितने आने होते हैं?

उत्तर:

एक रुपये में 16 आने होते हैं।

(ख) चार आने में कितने पैसे होते हैं?

उत्तर:

चार आने में 25 पैसे होते हैं।

(ग) आपके आस-पास गज शब्द का प्रयोग किस संदर्भ में किया जाता है? पता लगाइए और लिखिए।

उत्तर:

गज का प्रयोग – कपड़ा और जमीन नापने के लिए किया जाता है।

(घ) बताइए कि एक गज में कितनी फीट होती हैं?

उत्तर:

एक गज में 3 फीट होते हैं।

साझी समझ

प्रश्न- भारत में 'अतिथि देवो भव' की परंपरा रही है। आपके घर जब अतिथि आते हैं तो आप उनका अभिवादन कैसे करते हैं, अपनी भाषा में बताइए और अपने सहपाठियों के साथ चर्चा कीजिए कि अतिथियों को आप अपने राज्य, क्षेत्र का कौन-सा पारंपरिक व्यंजन खिलाना चाहते हैं।

उत्तर:

जब हमारे घर अतिथि आते हैं तो हम हाथ जोड़कर उनका अभिवादन करते हैं। उन्हें पहले पानी पिलाते हैं फिर चाय के साथ नमकीन, बिस्कुट इत्यादि रखते हैं। यदि अतिथि भोजन के समय आया है तो उसे दो सब्जियों के साथ भोजन करवाते हैं और मीठा भी खिलाते हैं। उनका पूरा सम्मान करते हैं। उनके साथ बैठकर बातें करते हैं और वक्त व्यतीत करते हैं। जब अतिथि वापस जाते हैं तो उन्हें- फिर आइएगा कहकर अपनत्व का एहसास करवाते हैं।

खोजबीन के लिए

प्रश्न- एक एकांकी में 'आने', 'गज' और 'तार' शब्द आए हैं। इनके विषय में विस्तार से जानकारी इकट्ठी कीजिए। इसके लिए आप अपने अभिभावक, अध्यापक, पुस्तकालय या इंटरनेट की सहायता भी ले सकते हैं।

उत्तर:

आने –

- **इकाई:-** आने (या आना)
- **मूल्य:-** 1/16 रुपये
- **विभाजन:-** 4 पैसे या 12 पाई
- **दशमलव प्रणाली में:-** 0.0625 रुपये (61/4 पैसे)
- **उपयोग:-** ब्रिटिश भारत में मुद्रा के रूप में।

गज –

- यह भूमि मापने की एक पारंपरिक इकाई है।
- **माप:-** 1 गज = 9 वर्ग फुट (3 फुट × 3 फुट)

- **उपयोग:-** भूमि और संपत्ति मापने के लिए।
- **क्षेत्र:-** उत्तरी भारत (पंजाब, हरियाणा, दिल्ली आदि)
- **अन्य नाम:-** वर्ग गज
- **ऐतिहासिक महत्व:-** मुगल काल से उपयोग में।

तार –

- यह संदेश भेजने वाला तार है, जिसे टेलीग्राम भी कहा जाता था।
- **काम:-** विद्युत संकेतों द्वारा जल्दी संदेश भेजना।
- **उपयोग:-** 19वीं और 20वीं सदी में बहुत लोकप्रिय, वर्तमान में लगभग बंद।